प्रातः क्लास 5-12-68 ओमशान्ति पिता श्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप समझा रहे हैं यहां तुम बैठ क्या करते हो। ऐसे नहीं सिर्फ शांति-धाम में बैठते हो। अर्थ सहित ज्ञानमय अवस्था में बैठते हो। तुम बच्चों को ज्ञान है बाप को हम क्यों याद करते हैं। बाप हमको बहुत बड़ी आयु देते हैं। बाप को याद करने से ही बिमारी आदि और पाप सभी कट जावेंगे। हम सच्चा सोना सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम्हारा कितना श्रृंगार होता है। तुम्हारी आयु बड़ी हो जावेगी। आत्मा कंचन हो जावेगी। अभी आत्मा में खाद पड़ी हुई है। याद की यात्रा से वह सभी खाद रजो तमो की पड़ी है वह निकल जावेगी। इतना तुमको फायदा होता है। फिर बड़ी आयु भी हो जावेगी। तुम स्वर्ग के निवासी बन जावेंगे। और बहुत धनवान बनेंगे। तुम पदमापदम भाग्यशाली बन जावेंगे। इसलिये बाप कहते हैं मन्मनाभव। मामेकं याद करो। कोई देहधारी के लिये नहीं कहते। बाप को तो शरीर है नहीं। तुम्हारी आत्मा भी निराकार थी। फिर पुनर्जन्म में आते2 पारस बुधि से पत्थर बुधि बन गई है। अभी फिर कंचन बननाहै। अभी तुम पवित्र बन रहे हो। पानी की स्नान तो जन्म-जन्मान्तर किये, समझा कि हम इससे पावन बनेंगे। परन्तु पावन बनने बदली और ही पतित बन नुकसान में पड़े हो। क्योंकि यह है झूठो माया.... झूठ बोलने के संस्कार हैं सभी के। नम्बरवन झूठ बोलने वाले हैं गुरु लोग। बाप कहते हैं मैं तुमको पावन बनाकर जाता हूं फिर तुमको पतित कौन बनाता है? यह साधु सन्त गुरु गुसाई। अभी फील करते हो ना हम कितना गंगा स्नान करते आये। परन्तु पावन तो बने नहीं। पावन बन कर तो पावन दुनिया में जाना पड़े। शान्तिधाम और सुखधाम है पावन धाम। एक है ही रावण की दुनिया। इसको दुःखधाम कहा जाता है। यह तो सहज समझने की बातें हैं ना। इसमें कोई मुश्किलात की बात नहीं। जो कोई मिले सिर्फ यह बोलो अपने को आत्मा समझ देहद के बाप को याद करो। आत्माओं का बाप परमपिता परमात्मा शिव है। शरीर का तो हरेक का अलग2 बाप है। आत्माओं का तो एक ही बाप है। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं, और हिन्दी में ही समझाते हैं। हिन्दी भाषा ही मुख्य है। तुम पदमापदम भाग्यशाली इन देवताओं को कहेंगे। यह कितने भाग्यशाली हैं। यह किसको भी पता नहीं है कि यह स्वर्ग के मालिक कैसे बने। अभी तुमको बाप सुना रहे हैं इस सहज राजयोगद्वारा इस पुरुषोत्तम संगम युग पर ही यह बनते हैं। अभी है पुरानी दुनिया और नई दुनिया का संगम। फिर तुम नई दुनिया के मालिक बनने जावेंगे। अभी बाप सिर्फ कहते हैं दो अक्षर अर्थ सहित याद करो तो भी ठीक है। गीता में मन्मनाभव अक्षर पढ़ते हैं परन्तु अर्थ बिलकुल नहीं समझते। बाप कहते हैं मुझे याद करो। क्योंकि मैं ही पतित-पावन हूं। और कोई ऐसे कह न सके। बाप ही कहते हैं मुझे याद करने से तुम पावन बन, पावनदुनिया में चले जावेंगे। पहले2 तुम सतो० थे फिर पुनर्जन्म लेते2 तमोप्रधान बने हो। अभी 84जन्म तुम्हारे पूरे हुये। हर 84 जन्म बाद फिर तुम नई दुनिया अब में देवता बनते हो। यह भी जानते हो हम 84 जन्म कैसे लेते हैं। इसको ही 84 का चक्र कहा जाता है। रचयिता बाप और रचना दोनो को तुम जान गये हो। तो अभी तुम आस्तिक बन गये हो। आगे जन्म-जन्मान्तर तुम नास्तिक थे। यह बात जो बाप सुनाते हैं और कोई जानते ही नहीं। कहां भी जाओ कोई भी तुम्हें यह बातें नहीं सुनावेंगे। अभी दोनो ही बाप (निराकार और साकार) तुम्हारा श्रृंगार कर रहे हैं। पहले तो बाप अकेला था। शरीर बिगर था। ऊपर से तो तुम्हारा श्रृंगार कर न सके। अभी दोनो मिलते हैं। तब ही तुम्हारा श्रृंगार होता है। अकेला कर न सके। कहते हैं, ना बन "ब त बारहां" बाकी प्रेरणा वा शक्ति आदि की बात नहीं। ऊपर प्रेरणा द्वारा बल मिल न सके। निराकार जब साकार शरीर का आधार लेते हैं तब तुम्हारा श्रृंगार करते हैं। अभी बच्चों की यह चलन ही कहां है। गटर में डुबोने लिये कितने कोशिश करते हैं। बाबा स्वर्ग में ले जाने पुरु० करते हैं यह फिर विषय वैतरणी नदी में जाने लग पड़ते। समझते भी हैं बाबा बराबर हमको स्वर्ग में ले जाते हैं। ड्रामा के प्लैन अनुसार बाबा बांधयनाम है। उनको डियुटी मिली हुई है। हर 5000 वर्ष बाद आते हैं तुम बच्चों के लिये। इस योगबल से तुम कितने कंचन बनते हो। आत्मा और काया दोनो कंचन बनती है। फिर रावण

राज्य में तुम छी2 बन जाते हो। फिर अभी सा0 करते हो इस पुरुषार्थ से हम ऐसा श्रृंगार हुआ बनेंगे। वहां क्रिमनलआई होती नहीं तो भी अंग सभी ढके हुये होते हैं। यहां तो देखो कितने नंगी रहती हैं। जो कोई भल देखे और हमारे पर फिदा होकर हमारा भी काला मुंह करे अपना भी करे। यह छी2/ रावण राज्य में सीखते हैं। इस ल0ना0 की देखो ड्रेस आदि कितनी अच्छी है। यहां सभी हैं देहअभिमानी। इन्हों को देह अभिमानी नहीं कहेंगे। इन्होंको तो नेचरल ब्युटी रहती है। बाप तुमको ऐसी नेचरल ब्युटीफुल बनाते हैं। आजकल तो कोई सच्चा जेवर पहन भी न सके। कोई पहने तो उनको ही लूट कर जायें। 12 मास तक उनके पिछाड़ी पड़ते रहे तब तक चांस मिले सभी लूटने का। वहां तो ऐसी कोई बात नहीं है। ऐसा बाप तुमको मिला है। इन बिगर तो तुम बन न सको। बहुत कहते हैं हम तो डायरेक्ट शिव दाबारे लेते हैं। परन्तु वह देंगे ही कैसे। भल कोशिश कर के देखो। देखो मिलता है। ऐसे बहुत कहते हैं हम तो शिव बाबा से दरसा पायेंगे। ब्रह्मा से पूछने की भी क्या दरकार है। शिव बाबा पुरुषार्थ से सभी कुछ दे देंगे। अच्छे2 पुराने बच्चे उनको भी माया ऐसी चक्र पहना लेती है एक को मानते हैं। परन्तु एक क्या करेंगे। बाप कहते हैं मैं एक कैसे आऊं। बात कैसे कर सकूं। मुख का तो गायन है। मुख से अमृत लेने कितना धक्का खाते हैं। फिर श्रीनाथ द्वारे जाकर दर्शन करते हैं। परन्तु उनका दर्शन करने से क्या होगा। इसको कहा जाता है भूत पूजा। उनमें आत्मा तो है ही नहीं। बाकी 5 तत्वों का पुतला बना हुआ है। तो गोयाबाबा को याद करना हो गया। 5 तत्व प्रकृति है ना। उनको याद करने से क्या होगा प्रकृति का आधार तो सबको है। परन्तु वहां है सतोप्रधान प्रकृति। यहां यह है तमोप्रधान प्रकृति। बाप को सतोप्रधान प्रकृति का कब आधार नहीं लेना पड़ता। यहां तो सतोप्रधान प्रकृति मिल न सके। यह जो भी साधु सन्त आदि हैं, बाप कहते हैं इन सभी का उधार मुझे ही करना पड़ता है। मैं निवृति मार्ग में आता ही नहीं हूं। यह है प्रवृति मार्ग। सभी को कहता हूं पवित्र बनो। जोड़ी हो चलो, वहां तो नाम ही सभी बदल जाता है। तो बाप समझाते हैं देखो यह नाटक कैसा बना हुआ है। एक को फिचर्स न मिले दूसरे से। 500 करोड़ हैं। सभी के फिचर्स अलग2 हैं। कितना भी कोई कुछ करे तो भी एक के फिचर्स से दूसरे का मिल न सके। इसको कहा जाता है कुदरत। बन्दर। स्वर्ग को भी बन्दर कहा जाता है ना। कितना शोभनिक है। माया के सात बन्दर्स हैं। बाप का है एक बन्दर। वह सात बन्दर्स एक पूर में रखो और यह एक पूर में रखो तो भी यह भारी हो जायेगा। एक तरफ ज्ञान एक तरफ भक्ति को रखो तो ज्ञान के तरफ बहुत भारी हो जायेगा। अभी तुम समझते हो भक्ति सिखलाने वाले तो ढेर हैं। ज्ञान देने वाला तो एक ही बाप है। तो बाप बैठ बच्चों को पढ़ाते हैं। श्रृंगार करते हैं। बाप कहते हैं पवित्र बनो। तो कहते नहीं हम तो गटर में जाकर छी छी बनेंगे। गरुड़ पुराण में भी विषय वैतरणी नदी दिखलाते हैं ना। बिच्छू टिण्डन सर्प आदि एक दो को काटते रहते हैं। यह है ही वेश्यालय। बाप कहते हैं तुम कितने निधनके बन जाते हो। हम तुमको गोड बनाते तुम फिर छी छी ओ जी बन जाते हो। बाप तुम बच्चों को ही समझाते हैं। बाहर में कोई को ऐसा सीधा कहो तो लाठी मारे। बड़ी युक्ति से समझाना होता है। कई बच्चों में कोई अकल नहीं रहता बात चित करने का। छोटे बच्चे एकदम इनोसेन्ट होते हैं। इसलिये इनको महात्मा कहा जाता है। कहां कृष्ण महात्मा, कहां यह सन्यासी निवृति मार्ग वाले महात्मा कहलाते हैं। वह है प्रवृति मार्ग वह कब भ्रष्टाचारी पैदा नहीं होते हैं। उनको कहते ही हैं श्रेष्टाचारी। अब तुम श्रेष्टाचारी बन रहे हो। बच्चे जानते हैं यहां बाप दादा दोनो इकट्ठे हैं। यह श्रृंगार जरूर अच्छा ही करेंगे। तो सभी दिल होगी ना जिन्होंने इन बच्चों को ऐसा श्रृंगार कराया है। तो हम क्यों न उनके पास जावें। इसलिये तुम यहां आते हो रिफ्रेश होने। दिल कोशिश करते हैं बाप के पास आने। जिनको पूरा निश्चय होता है वह तो कहेंगे चाहे मारो चाहे कुछ भी करो हम कब हाथ नहीं छोड़ेंगे। कोई तो बिगर कोई कारण ही छोड़ देते हैं। यह भी ड्रामा का अलब बना हुआ है। फारकती दे देते हैं। डायवोर्स दे देते हैं। बाप जानते हैं यह रावण के वश में

करना है। बाप कहते है कि एक तो पवित्र बनो। दैवीगुण धारन करो। अपना पोतामेल रखो। रावण उदवारा तुमको घाटा पड़ता है। मेरे दवारा फायदा होता है। व्यापारी लोग तो इन बातो को अच्छी रीती समझेंगे। यह है ज्ञान रत्न। कोई विरला व्यापारी ही इनेस व्यापार करे। तुम व्यापार करने आये हो। कोई तो अच्छी रीती व्यापार कर स्वर्ग का सौदा 21जन्मो लिये कर लेते है। 21जन्म तो क्या 50-60 जन्मो तक तुम बुद्धि बहुत सुखी रहते हो। पदमपति बनते हो। देवताओं के पैरो मे पदम दिखाते है नां। अर्थ थोडेई समझते है। तुम अभी पदमपति बन रहे हो तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिये। बाप कहते है मै कितना साधारन हूं। तुम बच्चो को स्वर्ग मे ले जाने आया हूं। बुलाते भी है कि हे पतित पावन आओ। पावन बनाओ। पावन रहते ही सुखधाम मे है। शान्तिधाम की कोई छिट्टी जगापनी नही हो सकती है। वो तो आत्माओं का झाड है। सूक्ष्म वतन मे कोई बात ही नही होती। बाकी यह सृष्टी चक्र कैसे फिरता रहता है वो तुम जान ही गये हो। सतयुग मे लक्ष्मी की डायनेस्टि थी। ऐसे नही कि एक ही लक्ष्मी सिर्फ राज्य करते थे। वृद्धी तो होती है नां। फिर द्वापर मे सो ही पुज्य सो फिर पुजारी बनते है। मनुष्य तो फिर परमात्मा के लिये कह देते है आपही पुज्य .... जैसे परमात्मा के लिये कहते है कि वो सर्वव्यापी है। इन बातो को तो अब तुम्ही समझते हो। आधा कल्प तुम गाते आये हो उंच ते उंच भगवान। और अब भगवानोवाच उंच ते उंच तुम बच्चे हो। तो ऐसे बाप की राय पर भी चलना चाहिये नां। गृहस्थ व्यवहार भी सम्भालना है। यहां पर तो सब रह नही सकते। सब रहने लगे फिर तो कितना बडा मकान बनाना पडे। नीचे से लेकर ऊंपर तक। यह भी तुम एक दिन देखेंगे कि कितनी लम्बी क्यू लग जायेगी दर्शन लेने लिये। कोई को दर्शन नही देता है तो गाली भी जाकर देते है। समझते है महात्मा का दर्शन करे। अब बाप तो है बच्चो को बच्चो को ही पढाते भी है। तुम जिनको रास्ता बताते हो। फिर कोई तो अच्छी रीती चल पडते है। कोई तो धारना कर नही सकते है। कितने ही है जो कि सुनते भी रहते है फिर बाहर मे जाते है तो वहां की वहां ही रख जाते है। वो खुशी नही, पढाई नही। योग नही। बाबा कितना समझाते है कि चार्ट रखो। नही तो बहुत पछताना होगा। हम बाबा को कितना याद करते है चार्ट देखते रहना चाहिये। भारत के प्राचीन योग की बहुत महिमा है। बाबा समझाते है कि कोई भी बात पूछे= नां समझो तो बाबा से पूछो। आगे तो तुम कुछ भी नही जानते थे। यह है ही कांटो का जंगल। कम महाशत्रु है वो अक्षर तो गीता के ही है। गीता पढते थे परन्तु समझते थोडेई है। बाबा ने भी सही ही आयु गीता पढी। समझते थे कि गीता का महात्म बहुत अच्छा है। पढते-2 ही एक दिन फैल दी। समझ मे आ गया कि इसी गीता से तो भारत गिरता आया है। अभी तो बाप सेकंडिक मे उंच पढाई देते है। वो गीता आद पढते-2 पट(जमीन)आ पडे है। गीता ही माइ बाप है। बाकी सब शास्त्र है रचना। और शास्त्र वेद आद को माता नही कहेंगे। माता के साथ ही फिर पिता भी है। पिता ने ही गाई हुई है। बाप आकर सुनाते रहते है। भक्ति मार्ग की गीता का कितना मान है। गीता बडी भी होती है छोटी भी होती है। कृष्ण आद के वो ही चित्र पैसे-2 का मिलता रहता है, वो ही चित्रो के फिर बडे-2 मन्दिर बनाते है। अमरनाथ पर दिखाते है कि पार्वती को अमरकथा सुनाई। वहां पर फिर तोता दिखाते है। पैरट पढते है। एक तो जंगली तोते है और एक कंठी वाले होते है। वो गीता सुनने वाला है जंगली तोते। तुम्हारे मे अब कंठी पडती रहती है। तुमको अब विजय माला का दाना बनना है। ऐसे मीठे-2 बाबा को सभी बाबा भी कहते है। समझते भी है कि उन्ही से स्वर्ग की राजाई मिलनी है। सुनते, कहते फिर भी अहो-मम माया फारकती देवनते। बाबा कहा तो बाबा माना ही बाप नां। भक्ति मार्ग मे भी गाया जाता है पतियों का भी पति है गुरुओं का भी गुरु है। वो एक ही है। आजकल तो सबसे बडा गुरु शंकराचार्य को मानते है। तुमने देखो कि बडे ते बडा शंकराचार्य भी शिव की पूजा करते थे। तो गुरु कैसे हुआ। तुम जानते हो कि गुरु तो ही एक सद्गति दाता है। और